

**W-3409(A)****M.A.(Fourth Semester) Examination, (Second Chance) June-2020****HINDI****Paper - 404****Kathakar Premchand****(Optional Paper)****Time : Three Hours****Maximum Marks : 85 (For Regular Students)****Minimum Pass Marks : 29****Maximum Marks : 100 (For Private Students)****Minimum Pass Marks : 34**नोट : **सभी** प्रश्न अनिवार्य हैं। प्रश्नों के अंक उनके सम्मुख अंकित किये गये हैं।

- Q.1. निम्नंकित पद्यांशों की सन्दर्भ सहित व्याख्या कीजिए। 17/20
- (अ) इस व्यवस्था ने हम जमींदारों में कितनी विलासिता, कितना दुराचार, कितनी पराधीनता और कितनी निर्लज्जता भर दी है, यह मैं खूब जानता हूँ, लेकिन मैं इन कारणों से इस व्यवस्था का विरोध नहीं करता। मेरा तो यह कहना है कि अपने स्वार्थ की दृष्टि से भी इसका अनुमोदन नहीं किया जा सकता। इस शान को निभाने के लिए हमें अपनी आत्मा की इतनी हत्या करनी पड़ती है कि हममें आत्माभिमान का नाम भी नहीं रहा। हम अपने असाधियों को लूटने के लिए मजबूर हैं। अगर अफसरों को कीमती-कीमती डालियाँ न दें, तो बागी समझे जायँ, शान से न रहें, तो कंजूस कहलाएँ। प्रगति की जरा-सी आहट पाते ही हम काँप उठते हैं, और अफसरों के पास फरियाद ले कर दौड़ते हैं कि हमारी रक्षा कीजिए। हमें अपने ऊपर विश्वास नहीं रहा, न पुरुषार्थ ही रह गया। बस, हमारी दशा उन बच्चों की-सी है, जिन्हें चम्मच से दूध पिला कर पाला जाता है, बाहर से मोटे, अंदर से दुर्बल, सत्वहीन और मोहताज।
- (ब) जनवाद और साम्यवाद का सम्पत्ति से वैर है। मैं उस समय तक साम्यवादियों का साथ न दूँगा, जब तक मन में यह निश्चय न कर लूँ कि अपनी सम्पत्ति त्याग दूँगा। मैं वचन से साम्यवाद का अनुयायी बनकर कर्म से उसका विरोधी नहीं बनना चाहता। कर्म और वचन में इतना घोर विरोध मेरे लिए असह्य है। मैं उन लोगों को धूर्त और पाखंडी समझता हूँ, जो अपनी सम्पत्ति को भोगते हुए साम्य की दूहाई देते फिरते हैं। मेरी समझ में नहीं आता कि साम्यदेव के पुजारी बनकर वह किस मुँह से विशाल प्रासादों में रहते हैं, मोटर-बोटों में जल-क्रीड़ा करते हैं और संसार के सुखों का दिल खोलकर उपभोग करते हैं। अपने कमरे से फर्श हटा देना और सादे वस्त्र पहन लेना ही साम्यवाद नहीं है। यह निर्लज्ज धूर्तता है, खुला हुआ पाखंड है। अपनी भोजनशाला के बचे-खुचे टुकड़ों को गरीबों के सामने फेंक देना साम्यवाद को मुँह चिढ़ाना, उसे बदनाम करना है।
- (स) उसके कल्पित राष्ट्र के कर्मचारी सेवा के पुतले होते, अध्यापक झोंपड़ी में रहने वाले बल्कलधारी, कंदमूल फल-भोगी संन्यासी, जनता व्देष और लोभ से रहित, न यह आए दिन के टंटे, न बखेड़े। इतनी अदालतों की जरूरत क्या-यह बड़े-बड़े महकमे किसलिए-ऐसा मालूम होता है, गरीबों की लाश नोचने वाले गिरोह का समूह है। जिसके पास जितनी ही बड़ी डिग्री है, उसका स्वार्थ भी उतना ही बढ़ा हुआ है। मानो लोभ और स्वार्थ ही विद्वता का लक्षण है गरीबों को रोटियां मयस्सर न हों, कपड़ों को तरसते हों, पर हमारे शिक्षित भाइयों को मोटर चाहिए, बंगला चाहिए, नौकरों की एक पलटन चाहिए। इस संसार को अगर मनुष्य ने रचा है तो अन्यायी है, ईश्वर ने रचा है तो उसे क्या कहें।

Q.2. हिन्दी कहानी के विकास में प्रेमचन्द के समग्र योगदान का मूल्यांकन कीजिए।

Q.3. गोदान का नायक कौन है? उसके चरित्र की दुर्बलताओं और विशेषताओं का चित्रण कीजिए।

Q.4. 'मंत्र' कहानी के उद्देश्य की समीक्षा कीजिए।

Q.5. निम्न लघु उत्तरीय प्रश्नों के उत्तर दीजिए-

(क) भगवतीचरण वर्मा की उपन्यास कला की विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।

(ख) यशपाल के कथा साहित्य की मूल संवेदना की संक्षिप्त विवेचना कीजिए।